UGC CARE LISTED
ISSN No.2394-5990

संशोधक

वर्ष : ९२ • मार्च २०२४ • पुरवणी विशेषांक ०८

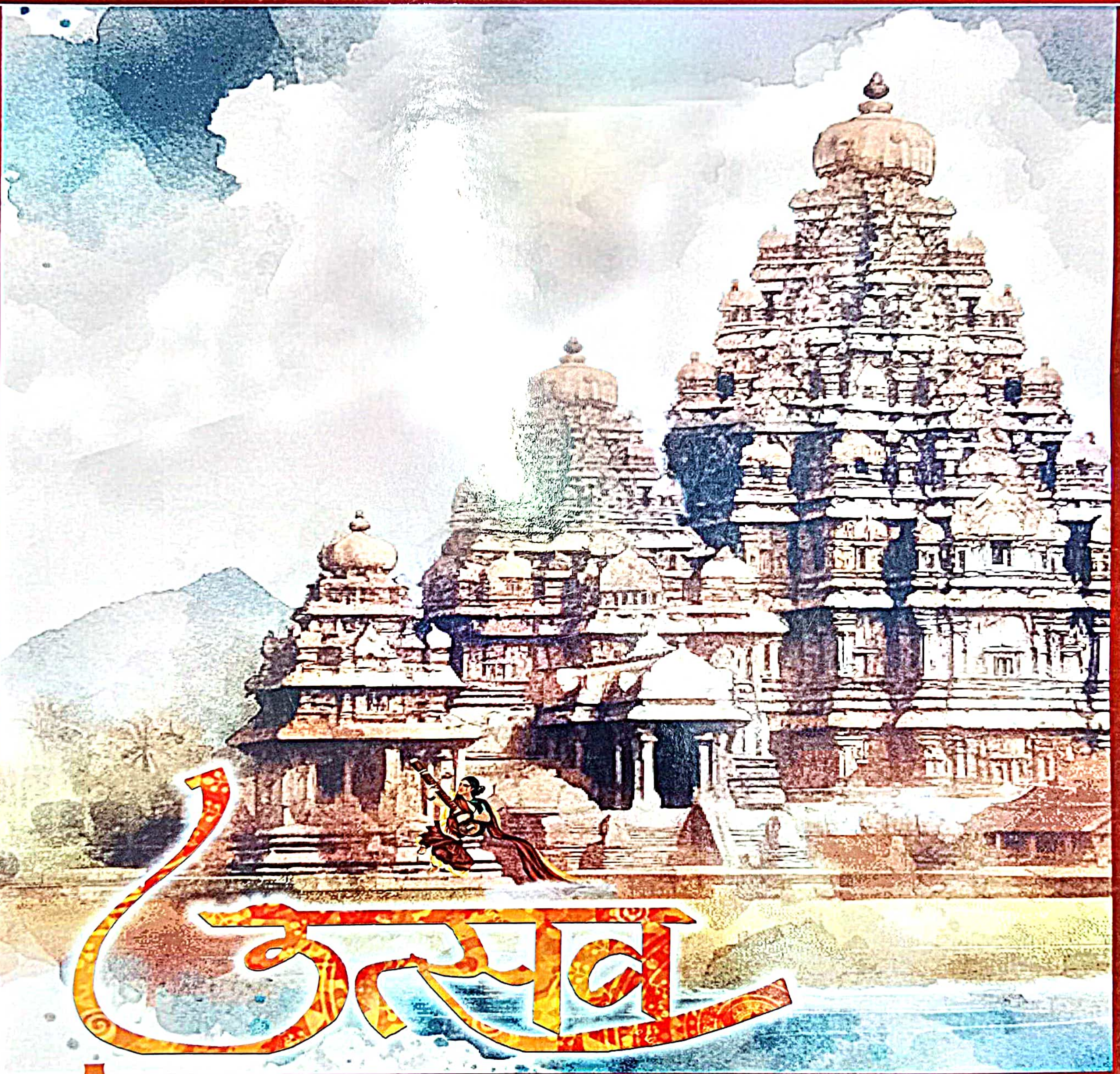

॥ श्री विश्वनाथो विजयते ॥
स्थापना : ९ जानेवारी १९२७

प्रकाशक : इतिहासाचार्य वि.का.राजवाडे संशोधन मंडळ, धुळे

Copy. Dr. Ravindra Patil

UGC CARE LISTED
ISSN No. 2394-5990

इतिहासाचार्य वि. का. राजवाडे मंडळ, धुळे
या संस्थेचे त्रैमासिक

।। संशोधक ।।

पुरवणी अंक ८ – मार्च २०२४ (त्रैमासिक)

- शके १९४५
- वर्ष : ९२
- पुरवणी अंक : ८

संपादक मंडळ

- प्राचार्य डॉ. सर्जेराव भामरे
- प्रा. डॉ. मृदुला वर्मा
- प्राचार्य डॉ. अनिल माणिक बैसाणे
- प्रा. श्रीपाद नांदेडकर

अतिथी संपादक

- प्राचार्य डॉ. के. एच. शिंदे
- डॉ. एस. व्ही. पणदे
- डॉ. बी. एम. मगदूम

✷ प्रकाशक ✷

श्री. संजय मुंदडा

कार्याध्यक्ष, इ. वि. का. राजवाडे संशोधन मंडळ, धुळे ४२४००१
दूरध्वनी (०२५६२) २३३८४८, ९४२२२८९४७१, ९४०४५७७०२०
Email ID : rajwademandaldhule1@gmail.com
rajwademandaldhule2@gmail.com

कार्यालयीन वेळ

सकाळी ९.३० ते १.००, सायंकाळी ४.३० ते ८.०० (रविवारी सुट्टी)

अंक मूल्य रु. १००/-

वार्षिक वर्गणी (फक्त अंक) रु. ५००/-, लेख सदस्यता वर्गणी : रु. २५००/-

विशेष सूचना : संशोधक त्रैमासिकाची वर्गणी चेक/ड्राफ्टने 'संशोधक त्रैमासिक राजवाडे मंडळ, धुळे' या नावाने पाठवावी.

अक्षरजुळणी : सौ. सीमा शिंत्रे, पुणे.

टीप : या नियतकालिकेतील लेखकांच्या विचारांशी मंडळ व शासन सहमत असेलच असे नाही.

७३. चंदगड तालुक्यातील शेतमजुरांचा आर्थिक अभ्यास

- डॉ. के. पी. वाघमारे ---------- ३१०

७४. जिरायती व बागायती शेतकऱ्यांच्या आत्महत्या प्रवृत्तीचा तुलनात्मक अभ्यास

- प्रा. सविता रामचंद्र रेवडे ---------- ३१५

७५. कृष्णा सोबती के साहित्य में शोषित एवं उपेक्षित नारी

- डॉ. कदम संदिप तानाजी ---------- ३१७

७६. गोंड आदिवासी जमाती के प्रमुख और समाजक्रांती के प्रणेता – ''बिरसामुंडा''

- आशा बुधराम मडावी ---------- ३२०

७७. दूधनाथ सिंह तथा ज्ञानरंजन की कहानियों में नारी विमर्श

- श्रीमती. ज्योती एकनाथ गायकवाड ---------- ३२२

७८. ''हिंदी कथा–साहित्य : नारी विमर्श''

- लेफ्टनंट डॉ. रविंद्र पाटील ---------- ३२७

७९. 21 वीं सदी के हिंदी उपन्यासों में आदिवासी आंदोलन

- डॉ. श्रीकांत पाटील ---------- ३३०

८०. सर्वेश्वर द्याल सक्सेना के काव्य में सामाजिक मूल्य विघटन

- डॉ. भोसले काकासाहेब बापूसाहेब ---------- ३३४

८१. आत्मकथाओं में चित्रित दलित चेतना

- श्रीमती खुडे शुभांगी मनोहर ---------- ३३८

८२. स्त्री वेदना और विद्रोह की कहानी : 'नगाड़े की तरह बजते है शब्द'

- डॉ. युवराज माने ---------- ३४१

८३. भारतीय दलित आंदोलन और हिंदी साहित्य

- प्रा. डॉ. संजय य. चोपडे ---------- ३४४

▲▲▲

ISSN No. 2394-5990

"हिंदी कथा-साहित्य : नारी विमर्श"

लेफ्टनंट डॉ. रविंद्र पाटील
अध्यक्ष, हिंदी विभाग
राजर्षि छत्रपति शाहू कॉलेज, कोल्हापुर
(महाराष्ट्र) 416003
ई-मेल :rcpatilshahu@gmail.com
मो. 9552564248 / 9307144065

शोध सार :

रामायण की सीता हो या महाभारत की द्रोपदी हो ये महान ऐतिहासिक पात्र भी इससे अछुते नहीं हैं। वर्तमान समय में विभिन्न परिस्थितियों के कारण इसमें परिवर्तन दिखाई देते हैं। नारी विमर्श का आशय पुरुष को नीचा दिखाना नहीं है बल्कि स्त्री समाज के अधिकारों को समान दृष्टिकोण से देखना है। ङ्गस्वफके प्रति सजगता और अपने अधिकारों एवं अस्तित्व के प्रति चेतना नारी विमर्श की शक्ति है। नारीवादी मुद्दा सबसे पहले पश्चिमी देशों में उठाया गया मगर दुनिया की अधिकतम स्त्रियाँ इससे प्रभावित हुई। प्रभा खेतान के उपन्यासों में सामाजिक, राजनीतिक, सांस्कृतिक पहलूओं को बखुबी से उठाया गया है। चंद्रकांता के उपन्यासों की नारी अबला से सबला बनी हुई नजर आती है। उन्होंने नारी की स्थिति गति, उन्नति, अधिकार एवं अभिव्यक्ति स्वातंत्र्य जैसी बातों को साहित्य का माध्यम बनाया है।

हिंदी उपन्यासों के समान कहानियों में भी नारी-विमर्श का चित्रण हुआ है। महान कहानीकार प्रेमचंद जमीन से जुडे साहित्यकार थे। समय की मानसिकता और पारंपारिक चिंतन से उनका साहित्य जुडा हुआ है। उन्होंने कहानियों के माध्यम से प्रताडित लोगों को वाणी दी है। मालती जोशी ने स्त्री स्वातंत्र्य और समानता के लिए संघर्ष किया है। स्त्री की समस्या, भावना, वेदना आदि बातों पर खुलकर लिखा है।

प्रस्तावना एवं शोध आलेख:

जब भारतीय साहित्य में नारी विमर्श की बात होती है। तो प्राचीन, मध्य और आधुनिक साहित्य को गौर से देखना आवश्यक है। चाहे 'रामायण' की सीता हो या 'महाभारत' की द्रोपदी से जैसे महान ऐतिहासिक पात्र भी इससे अछुते नहीं है। इससे पता चलता है कि नारी विमर्श भारतीय प्राचीन इतिहास से जुडी हुई है। विभिन्न परिस्थितियों के कारण इसमें परिवर्तन दिखाई देते हैं। नारी विमर्श का आशय पुरुष समाज को नीचां दिखाना नहीं है बल्कि स्त्री समाज के अधिकारों को समान दृष्टिकोण से देखना है। नारी विमर्श आधुनिक साहित्य की देन है। आज नारी पुरुष के बराबर स्थान प्राप्त करने के लिए संघर्ष कर रही है। आधुनिक काल में अनेक पुरुष साहित्यकारों के साहित्य में नारी केंद्र में रही है। स्वयं नारी ने भी कागज-कलम से अपनी व्यथा सुनाई परंतु यह साहित्य केवल स्थिति का बयान करके रह गया। इसके संदर्भ में मोल्लम डोलमा लिखती है, अपने अस्तित्व के प्रति सजगता, आत्मचेतना आदि भाव हमें स्वातंत्र्योत्तर भारत में लगभग सन 1960 के बाद के काल में साहित्य में नजर आने लगे। 'स्व' के प्रति सजगता और अपने अधिकारों एवं अस्तित्व के प्रति चेतना नारी विमर्श की शक्ति है। स्वातंत्र्योत्तर भारत में अनेक पुरुष रचनाकारों के साथ-साथ नारी रचनाकार लेखन का कार्य करने लगी, इसकी वजह से नारी की अपनी परिस्थितियाँ, भावनाएँ, अनुभव, सोच आदि का रेखांकन साहित्य में होने लगा।[1] अनेक महिला साहित्यकार उभरकर सामने लाने लगी। वे अपनी आप बीती के साथ-साथ इर्द गीर्द की बातों को साहित्य में उठाने लगी परंपरा और रुढ़ियों के बीच अटकी हुई नारी अब खुलकर लिखने लगी। इनमें प्रभा खेतान चित्रा मुदगल, मैत्रेयी पुष्पा, सूर्यबाला, चंद्रकांता, अलका सरावगी, मृदुला गर्ग, ममता कालिया, मन्नु भंडारी, शशिप्रभा शास्त्री, कृष्णा सोबती, नाशिरा शर्मा जैसी अनेक लेखीकाओं ने नारी-विमर्श को अपने साहित्य का माध्यम बनाया।

नारी-विमर्श के संदर्भ में प्रभा खेतान का मानना है कि, हालांकि नारीवादी मुद्दा पहले-पहल पश्चिमी देशों में उठाया गया, मगर दुनिया की अधिकतम स्त्रियाँ इससे प्रभावित हुई, और इनके व्यक्तित्व और सामाजिक आचरण को आमूल रूप से प्रभावित किया। नारीवादी विमर्श वास्तव में नारी जीवन के अनछूए अनजाने पीडा जगत के उदघाटन के अवसर उपलब्ध

करता है परंतु उसका उद्देश्य साहित्य एवं जीवन में स्त्री के दोयज दर्जे की स्थिति पर आँसू बहाने और यथास्थिति बनाए रखने के स्थान पर उन कारकों के खोज से है, जो स्त्री की इस स्थिति के लिए जिम्मेदार है।[2]

प्रभा खेतान हिंदी की बहुचर्चित उपन्यासकार है। उनके उपन्यासों में सामाजिक राजनीतिक सांस्कृतिक पहलूओं को बखूबी से उठाया गया है। सन 1990 में प्रकाशित ङ्गआओ पेपे घर चलेफ उनकी बहुचर्चित नारी केंद्रीत उपन्यास है। अमरीकी औरत के वास्तविक जीवन के भयानकता को स्पष्ट करनेवाला उपन्यास है। भोग विलासीता में डुबी अमरीकी स्त्री अंदर से कितनी अकेली और असहाय्य दिखाई देती है इसका वास्तव वर्णन उपन्यास में हुआ है। उपन्यास के एक प्रसंग में लेखिका लिखती है, माई डियर! औरत कहाँ नहीं रोती और कब नहीं रोती। वह जितनी ही रोती है, उतनी ही औरत होती जाती है।3 इससे स्पष्ट होता है कि प्रभा खेतान के अपने उपन्यास में नारी विमर्श का चित्रण किया है।

प्रस्तुत उपन्यास में लेखिका ने अमरीकी नारी के एकांकी जीवन एवं वास्तविकता को उद्घाटित किया है। यहाँ की नारी आर्थिक दृष्टि से संपन्न है परंतु अकेलापण उसकी सबसे बडी समस्या बनी हुई है। अंध आधुनिकता और तेजतरार व्यापार ने मानवीय संवेदना को खत्म किया है। वहाँ के जानवर मनुष्य से भी बेहतर संवेदना रखते हैं। उपन्यास की पात्र आइलिन का कुत्ता 'पेपे' उसकी समाधि पर जाके आँसू बहाता है। इस प्रसंग को देखकर लेखिका का दिल पिगल जाता है। इस प्रसंग का वर्णन करते हुए लेखिका लिखती है, पेपे क्या तुम्हारे गले में मेरा कढाईवाला कालर अब भी बँधा है।[4] अत: निष्कर्षत: कह सकते है कि पुरे विश्व का संचालन करनेवाले अमरिका में नारी भी आधुनिकता एवं पुरुषी मानसिकता के कारण संघर्ष करती हुई नजर आती है।

स्वातंत्र्योत्तर हिंदी महिला उपन्यासकारों में चंद्रकांता ने अपनी अलग पहचान बनायी है। अपने साहित्य में समाज के विविध समस्याओं का उदघाटन किया है। उनके साहित्य की नारी अबला से सबला बनती हुई नजर आती है। नारी की स्थिति, गति, उन्नति अधिकार, एवं अभिव्यक्ति स्वातंत्र्य जैसी बातों को साहित्य का माध्यम बनाया है। 'अंतिम साक्ष' चंद्रकांता का चर्चित उपन्यास है। प्रस्तुत उपन्यास के केंद्र में कश्मीर और वहाँ का लोकजीवन है। इस उपन्यास का कथानक परिवार के विघटन से शुरू होता है। जिसमें बालमन पर विघटन का कैसा प्रभाव होता है इसका सजीव चित्रण है। उपन्यास के केंद्रीय पात्र मीना मौसी और विकी है। प्रस्तुत उपन्यास की केंद्रीय संवेदना मीना से जुडी हुई है। अच्छे खासे परिवार से संबंधीत होने के बावजुद भी मीना का विवाह जगन जैसे गुंडे से किया जाता है। जगन मीना को एक भोग्य वस्तु मात्र मानता है। वह उसे मदनलाल को बेचता है। मजबुरी में उसे वेश्या बनना पडता है। कोठे का संगीत मास्टर कोठेवाली को पैसे देकर मीना को कोठे से बाहर निकालता है। उसे रेडिओ गायिका से स्टार बना देता है। उनकी मुलाकात प्रताप उर्फ बाऊजी से होती है। बाऊजी (प्रताप) मीना से शादी करने की इच्छा व्यक्त करते हैं तब मीना विरोध करते हुए कहती है, नहीं मैं दीदी से किसी प्रकार का विश्वासघात नहीं करूँगी।[5] अनेक संघर्ष करने के बाद भी मीना मेहनत करती है और स्टार बन जाती है।

उपन्यासों के समान हिंदी कहानियों में भी नारी विमर्श का चित्रण भारी मात्रा में हुआ है। जब बात कहानी की होती है तो सबसे पहले नाम आता है मुंन्सी प्रेमचंद जी की क्योंकि प्रेमचंद जमीन से जुडे हुए कहानीकार थे। समय की मानसिकता और पारंपारिक चिंतन उनका साहित्य जुडा हुआ है। प्रेमचंद ने अपने कहानियों के माध्यम से प्रताडित लोगों को वाणी देने का प्रयास किया है। उनकी कहानियाँ इसके सबसे बडे प्रमाण है। 'ठाकुर का कुआँ' प्रेमचंद की बहुत ही ख्यात नाम कहानी है। इसके केंद्र में जोखू और पत्नी गंगी है। जो गरिब एवं निम्न जाती के है।जो ठाकुर और उच्च जाति के लोगों से पीडित है। गंगी प्रस्तुत कहानी में विद्रोही नारी के रूप में चित्रित है। पति जोखू के लिए जान जोखिम में डालकर ठाकुर के कुँएँ पर पानी लाने पहुँचती है। वह खुद को अछूत मानने से इन्कार करती है। इस प्रसंग का वर्णन करते हुए लेखक लिखते हैं, हम क्यों नीच है और ये लोग क्यों ऊँच है? इसलिए की ये लोग गले में तागा डाल देते है? यहाँ तो जीतने है। चोरी ये करे, जाल, फरेब ये करें, झूठें मुकदमें ये करें अभी इस ठाकुर ने तो उस दिन बेचारे गडेरियों की एक भेड चुरा ली थी और बाद में मारकर खा गया। इन्हीं पंडित जी के घर में तो बारहों मास जुआ होता है। सही साहुजी तो घी में तेल मिलाकर बेचते हैं। काम करा लेते हैं। मजदूरी देते नानी मरती है।[6] यहाँ पर गंगी ने ठाकूर, साहू तथा गाँव के उच्च जाति के लोगों का कडा विरोध किया है।

साठोत्तरी हिंदी कथाकारों में जो अनेक नाम प्रतिष्ठीत हुए है उनमें मालती जोशी का नाम भी सम्मान के साथ लिया जा सकता है। उन्होंने स्त्री स्वातंत्र्य और समानता के लिए संघर्ष किया है। स्त्री की समस्या, भावना, वेदना आदि बातों पर खुलकर लिखा है। साथ ही नारी त्रासदी, शोषण, अस्मिता आदि बातों को उठाया है। सन 2021 में प्रकाशित कहानी

ISSN No. 2394-5990

'उत्सव' में ऐसे ही एक प्रसंग का वर्णन करती है। 'कहानी की प्रियांका उर्फ पिंकी 1 महिने अधिक दिन अपने मायके में ही रहती है। पिंकी का भाई पूरे पाँच साल बाद अपने परिवार के साथ अमरिका से अपने घर आता है। एक महिने के बाद भाई का परिवार अमरिका लौटा जाता है। पिंकी का पति बेटे की पढाई की चिंता में अपने साथ ले जाता है। तीन-चार दिन बाद पिंकी को बेटे की याद आने लगती है। फोन करने पर पता चलता है कि उसके नंनद की सगाई हो रही है ससुरालवालों ने पिंकी को खबर तक नहीं दी। इस बात का पता चलते ही पिंकी की माँ शोर मचाने लगती है। मम्मी की बाते सुनकर पिंकी सोचने लगी। ससुरालवाले उससे ऐसा बर्ताव क्यों करते हैं। उसके पति गौतम ने भी उसके साथ बाते करना छोड दिया है। उसका अपना बेटा भी उसे याद नहीं करता। उसके बगैर अपनी नानी के साथ आराम से रहता है। सासु ससुर भी घरके किसी समारोह में नहीं बुलाते। इस प्रसंग का वर्णन कहानीकार इस प्रकार करते हैं, कायदे से तो हमें भी निमंत्रण मिलना चाहिए था। पर जब घर की बहु को ही नहीं बुलाया तो हम लोग क्या लगते हैं और अब तुम्हारी चाची सास पूरी बिरादारी में कहती फिरेगी कि गौतम का बहू तो मायके में ही पडी रहती है। उसे ससुराल से कोई लेना-देना नहीं है। सोलह सोमवारवाली बात याद है न।[7] अत: यहाँ पर पिंकी के मम्मी के स्वाभिमान को चोट पहुँचती है वह बिगडे हालात के लिए पिंकी के ससुरालवालों को जिम्मेदार मानती है। विवाह के छ साल बाद भी पिंकी की मम्मी कोई ना कोई कारण बताकर पिंकी को मायके बुलाती है। ससुर के षष्टिपूर्ति के दिन पिंकी सोलह सोमवार के दिन का कारण बताकर मायके चली आती है। ससुरालवाले इस बात से नाराज हो जाते हैं। इस कारण दोन्हों परिवारों के बीच दरारें बढ़ जाती है। गौतम बेटे रजत को लेने के लिए पिंकी के घर आता है और पिंकी से कहता है, रजत बैग उठाकर बोले मैं इसे ले जाता हूँ। उसकी पढ़ाई बरबाद हो रही है। तुम्हारी जब मर्जी हो आ जाना।[8]

निष्कर्ष :

अत: निष्कर्षत: कहा जा सकता है कि साहित्य में नारी विमर्श की बातें बहुत पुरानी है। रामायण, महाभारत में भी देखने को मिलती है। परंतु नारी-विमर्श की संकल्पना का उद्भव आधुनिक काल में हुआ ऐसा माना जाता है। सोच विचार और विचार विनिमय करना ही विमर्श है। प्रभा खेतान की भोग विलास में डुबी हुई अमरीकी स्त्री हो, चंद्रकांता की मीना हो, प्रेमचंद की गंगी हो या फिर मालती जोशी की पिंकी हो ये सभी पात्र नारी-विमर्श के प्रतिक के रूप में उभरकर सामने आते हैं। वर्तमान समय में नारी अपने अधिकारों की माँग कर रही है। कुछ हद तक सफल भी हो रही है।

स्त्री इतने सालों तक अन्याय सहती हुई आयी है। इन्हीं बातों को महिला साहित्यकार खुलकर लिख रहे हैं।

संदर्भ संकेत :

1) मोलम डोलना, शशी प्रभा शास्त्री के उपन्यासों में नारी विमर्श, International Journal of Advance and Applied Kolhapur ISSN No. 2347-7075 page no.67.
2) रेखा कस्तवार: स्त्री चिंतन की चुनौतियाँ, पृष्ठ 27.
3) प्रभा खेतान, 'आओ पेपे घर' चले, वाणी प्रकाशन नई दिल्ली, प्रथमसंस्करण, 1990, पृष्ठ. 54.
4) वही, पृष्ठ 149
5) चंद्रकांता अंतिम साक्ष्म, पृष्ठ 79
6) डॉ.दिनेश प्रसाद सिंह, प्रेमचंद विविध आयाम, अनुष प्रकाशन, पटना, प्रथम संस्करण, 1983, पृष्ठ 68
7) प्रो. प्रकाश देव, समकालीन कथा साहित्य में स्त्री-विमर्श, पृष्ठ 104
8) (सं) डॉ. लक्ष्मीवल्ल सिंघवी, श्री त्रिलोकीनाथ चतुर्वेदी, साहित्य अमृत मासिक पत्रिका, (4/19 आसफ अली रोड, नई दिल्ली, 02) पृष्ठ संस्करण 09

■■■